चर्चा

'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब और खेलेगो कूदोगे होगे खराब' वाली कहावत अब पुरानी हो चुकी है। खेल आज के समय बहुत आगे निकल गया है। लोग इसको एक करियर के रूप में देख रहे हैं। रोजाना कहीं न कहीं कोई न कोई खेल प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा है। 35वें राष्ट्रीय खेल का आयोजन 31 जनवरी से 14 फरवरी के बीच हुआ। इसकी कवरेज का अध्ययन ही इस शोध में किया गया है। इसके लिए दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर दो पत्रों के लिया गया है। दोनों ही पत्रों में राष्ट्रीय खेल की कवरेज का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध को इस उद्देश्य के साथ शुरू किया गया कि राष्ट्रीय खेल को दोनों पत्रों ने कितनी कवरेज दी। उम्मीद के मुताबिक कवरेज न मिलने के पीछे क्या कारण रहे?

शोध को करने के लिए साक्षात्कार, प्रश्नावली, अंतर्वस्तु विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही लोगों से प्रश्नावली भरवाने के लिए प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है, जिससे प्रयोज्यों की सही प्रतिक्रिया मिल सके।

राष्ट्रीय खेल राष्ट्रीय स्तर की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिता है। बावजूद इसके इसको उम्मीद के मुताबिक समाचार-पत्रों में स्थान नहीं दिया गया है। दोनों ही पत्रों में क्रिकेट को ही प्राथमिकता के साथ छापा गया है। दोनों पत्रों में आधे से ज्यादा स्थान पर क्रिकेट का ही वर्चस्व कायम रहा है। हां इतना जरूर है कि क्रिकेट के बाद राष्ट्रीय खेल को ही तवज्जों की दी गई है। लेकिन उसको दिया स्थान और संख्या काफी कम है। इसके पीछे जो तर्क सामने आए उसमें प्रमुख है कि उस समय क्रिकेट विश्व कप शुरू होने वाले थे, जिसके कारण समाचार-पत्र का ध्यान उसी ओर था। राष्ट्रीय खेल से बड़े खिलाड़ी नदारद थे। खेल संघों का आपसी विवाद चल रहा था। विवाद के कारण पूरे आयोजन का छवि खराब भी हुई और उसके कारण कई खिलाड़ी इन खेलों में भाग नहीं ले पाए। खेल का आयोजन स्थल केरल था। आयोजन स्थल के केरल होने का असर भी इन दोनों पत्रों की कवरेज पर पड़ा। दोनों पत्रों में से किसी ने भी अपना संवाददाता वहां नहीं भेजा। वजह साफ है कि कोई भी पैसे अपनी जेब से खर्च नहीं करना चाहता। जब तक उस खबर के लिए कोई प्रायोजक तैयार न हो। कवरेज ज्यादा न मिलन के पीछे एक वजह यह भी रही कि राष्ट्रीय उतने लोकप्रिय नहीं है।

क्रिकेट के खबरें ज्यादा देने के पीछे तर्क दिया गया कि लोग इसकी खबरों को पढ़ना चाहते हैं। सवाल है कि जब तक समाचार-पत्र दूसरे खेलों की खबरें नहीं देंगे तब तक वह लोगों के बीच अपनी जगह कैसे बना पाएंगे। इस तरह दूसरे खेलों की खबरों से लोग वंचित रहेंगे और उन खेलों का विकास बहुत धीमी गति से होगा। दर्शक या पाठक के बिना कोई खेल टिक नहीं सकता। क्योंकि कवरेज का असर सीधे खेल के विकास पर पड़ता है। अगर ओलंपिक की भी कवरेज न हो तो वह एक क्षेत्रीय घटना बनकर रह जाएगा। इसलिए खेल के विकास के लिए कवरेज बहुत जरूरी है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय खेल भारत में ओलंपिक की तर्ज पर शुरू किए गए थे। राष्ट्रीय स्तर की यह सबसे बड़ी प्रतियोगिता है। इस तरह की प्रतियोगिताएं न केवल खिलाड़ियों के प्रदर्शन को मापने का काम करती हैं बल्कि जिस राज्य में इसका आयोजन हो रहा है वहां एक बुनियादी ढ़ाचा तैयार होता है जो भविष्य के खिलाड़ी, आयोजक व निर्णायकों के निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बावजूद इसके समाचार-पत्रों ने इस प्रतियोगिता की खबरों को प्राथमिकता के साथ नहीं छापा। उनकी प्राथमिकता क्रिकेट ही रहा जिसे भारत में एक तरह से धर्म का दर्जा हासिल है। हां यह जरूर है कि क्रिकेट के बाद राष्ट्रीय खेल की ही खबरें दी गई। लेकिन आधे से ज्यादा खबरें तो क्रिकेट की ही दी गई। क्रिकेट के लोकप्रिय होने और बने रहने के पीछे एक बड़ा कारण है इस खेल को मीडिया में लगातार स्थान मिलता है। जिस खेल को लोग ज्यादा देखेंगे और पढ़ेंगे उस खेल के प्रति उनकी जानकारी और जिज्ञासा दोनों बढ़ेंगी। जब किसी खेल के देखनेवाले और पढ़नेवाले बढेंगे तो उस खेल में पैसा आएगा और खेल विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

राष्ट्रीय खेल में बहुत सारे खेलों का समावेश होता है। इसमें पूरा देश भाग लेता है। इतनी बड़ी प्रतियोगिता की दैनिक भास्कर ने पूरे पंद्रह दिन भी कवरेज नहीं दी। दैनिक जागरण ने इसकी कवरेज ठीक-ठाक दी है। दोनों ही पत्रों में संख्या के आधार पर क्रिकेट के बाद राष्ट्रीय खेल को ही कवरेज दी गई है। लेकिन जहां तक स्थान की बात है। दैनिक जगरण ने तो क्रिकेट के बाद राष्ट्रीय खेलों को ज्यादा स्थान दिया है लेकिन दैनिक भास्कर ने टेनिस को क्रिकेट के बाद स्थान के आधार पर प्राथमिकता दी है।

राष्ट्रीय खेल में शामिल विभिन्न खेलों पर नजर डाले तो कई खेल रहे जिनकी खबर दोनों समाचार-पत्रों में से किसी ने नहीं दी। जैसे- कैनोइंग और कायाकिंग, तलवारबाजी, हैंडबाल, लॉनबॉल, ताइकांडो, ट्रायथलन और याचिंग आदि। दैनिक जागरण ने राष्ट्रीय खेल में शामिल एथलेटिक्स को सबसे ज्यादा स्थान दिया जबकि दैनिक भास्कर ने मिश्रित खेल की खबर पर सबसे ज्यादा स्थान खर्च किया है। दोनों ही पत्रों ने हरियाणा के खबर को प्राथमिकता के साथ दिया है।

दोनों ही पत्रों ने राष्ट्रीय खेल की रिपोर्टिंग के लिए किसी भी संवाददाता को केरल नहीं भेजा। दैनिक भास्कर ने जहां सारी खबरें एजेंसी से दी वहीं दैनिक जागरण ने कुछ खबरें हरियाणा से रिपोर्ट कर दी। जब कोई संवाददाता रिपोर्ट करने के लिए नहीं जाता तो समाचार-पत्र को एजेंसी के भरोसे पर बैठना पड़ता है। फिर सभी जगह खबरें एक समान होती हैं। दोनों ही पत्रों ने कोई विश्लेषणात्मक रिपोर्ट नहीं दी। न कोई साक्षात्कार और किसी विशेषज्ञ की कोई राय सभी खबरें सपाट रही।

इस लघु शोध में दोनों पत्रों की खेल के विषय में क्या नीति है साफ हो गई है। दोनों ही पत्रों का यही कहना है कि जो लोग पढ़ना चाहते हैं वह हम दे रहे हैं। इसका सीधा अर्थ है कि समाज के प्रति उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं हैं। पत्रों में काम करने वाले मानते हैं कि राष्ट्रीय खेल को जो कवरेज मिली है वह काफी नहीं है लेकिन जो उनके ऊपर बैठे हैं वह खेल के विकास से ज्यादा मार्केट के बारे में सोचते हैं। किस खेल की खबर से उनके पत्र को कितना फायदा होगा, उनका ध्यान इसी बात पर रहता है। एक पत्र ने यहां तक कहा कि मीडिया मार्केट के हिसाब से चलता है।

यहां एक बात ध्यान रखने योग्य है कि आज के समय में मीडिया पूरी तरह एक व्यवसाय हो गया है। समाचार-पत्रों के साथ यह बात जुड़ी हुई है कि वह अपने लागत से काफी कम कीमत पर लोगों को मिलता है। उसकी लागत का अधिकतर पैसा विज्ञापन से आता है और विज्ञापन पाठकों की संख्या के आधार पर तय होते हैं। अगर कोई समाचार-पत्र पाठकों के अनुसार खबर दे रहा हैं तो उसमें गलत क्या है? पत्रों और उससे जुड़े लोगों की माने तो अगर समाचार-पत्र समाज सुधार पर उतर आएगा तो उसमें काम करने वालों की सैलरी कहां से आएगी। क्योंकि यह कोई चैरिटेबल ट्रस्ट तो है नहीं।

समाचार-पत्र या मीडिया जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। क्या वह भी केवल वही प्रकाशित करेगा (समाचार-पत्र के संदर्भ में) जो लोग पढ़ना चाहते हैं, या उसे उस चीज का प्रकाशन करना चाहिए जिसकी समाज को जरूरत हो। मीडिया को हमारे देश में एक अलग नजरिए देखा जाता है। उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह समाज को सही रास्ता दिखाएगा। लेकिन जिस रास्ते पर समाज चल रहा है वह चाहे सही हो या गलत उसके पीछे अगर मीडिया चलने लगे तो उसकी प्रासंगिकता क्या रहेगी? यदि समाचार-पत्र राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं पर लोगों की

विचारधारा को प्रभावित करने का दम भरते हैं तो खेल संस्कृति को बनाने और उत्साहित करने के दायित्व से वह कैसे बरी हो सकते हैं।

यहां यह बात सही है कि लोग क्रिकेट के बारे ज्यादा पढ़ना चाहते हैं लेकिन यह भी सच है कि लोग केवल क्रिकेट के ही बारे नहीं पढ़ना चाहते। लोग अन्य खेल को भी देखना और पढ़ना चाहते हैं। इस शोध में लोगों ने माना है कि पत्रों में क्रिकेट के अलावा भी अन्य खेलों को स्थान देना चाहिए। जबकि राष्ट्रीय खेल के दौरान में क्रिकेट की खबरों का वर्चस्व दिखा है। जिस खेल की खबर ज्यादा उसकी लोकप्रियता ज्यादा होगी। क्योंकि कवरेज का असर लोकप्रियता पर पड़ता है।

राष्ट्रीय खेल को कम कवरेज मिलने के पीछे केवल पत्रों को दोष देना भी सही नहीं है। आयोजकों की भी गलती साफ झलकती है। खेल संघ अपने आपसी झगड़े और कलह से नहीं उभर पाए। इन खेलों में बड़े खिलाड़ियों ने हिस्सा नहीं लिया। दैनिक जागरण ने पहले ही दिन खबर दी थी कि ''स्टार खिलाड़ियों की गैरमौजूदगी में शुरू होंगे राष्ट्रीय खेल।''

इसके साथ ही इसके समय को लेकर भी सवाल खड़ा हो सकता है। भारत में क्रिकेट बहुत लोकप्रिय खेल है और क्रिकेट विश्व कप के आस-पास प्रतियोगिता को रखना क्या सही है? क्रिकेट वर्ल्ड एक बड़ा अंतरराष्ट्रीय आयोजन है तो निश्चित तौर पर इसकी कवरेज का असर दूसरे खेल की कवरेज पर पड़ेगा ही। आम जनता और अधिकतर विशेषज्ञों का तो मानना है कि अगर राष्ट्रीय खेल क्रिकेट विश्व कप के आसपास न होते तो इसको ज्यादा कवरेज मिलती। लेकिन इसका दूसरा पहलू यह भी है कि उसी समय हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) भी हो रहे थे। क्रिकेट वर्ल्ड कप तो अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता है लेकिन यह तो हमारी लीग है अगर राष्ट्रीय खेल को लेकर सरकार या आयोजक गंभीर होते तो वह इस बात की मांग कर सकते थे कि एचआईएल के समय में हेर-फेर किया जाए जिससे राष्ट्रीय खेल में ए ग्रेड के खिलाड़ी शामिल हो सके। पर ऐसा नहीं हुआ। खेल के बजाय सभी ने अपना फायदा देखा।

किसी एक खेल के विकास के दम पर हम 'स्पोर्टिंग नेशन' नहीं बन सकते। स्पोर्टिंग नेशन बनने के लिए हमें दूसरे खेलों पर ध्यान देना होगा। क्योंकि खेल केवल पदक नहीं बल्कि एक स्वस्थ्य नागरिक देता है। खेल हमारे जीवन के हर पहलू से जुड़ा हुआ है। पिछले ओलंपिक में हमने केवल छह पदक जीते थे। एल.के. आडवाणी ने अपने लेख में इस बात पर चिंता जताई है कि इतनी बड़ी

आबादी लेकर हमने केवल छह पदक जीते हैं। उनकी चिंता सही भी है। ओलंपिक में हमारे पदकों की संख्या दहाई अंकों में आए इसके लिए हमें दूसरे खेलों को भी अपने जीवन में स्थान देना होगा।

उपकल्पना जांच

- पहली उपकल्पना थी कि "क्रिकेट की खबरें ज्यादा रहती हैं।" यह उपकल्पना बिल्कुल सही साबित हुई है। शोध में पाया गया कि संख्या और स्थान के आधार पर आधे से ज्यादा खबरें और स्थान क्रिकेट को दिया गया।
- दूसरी उपकल्पना थी कि "राष्ट्रीय खेलों को बहुत कम स्थान दिया गया है।" यह उपकल्पना आधी सही और आधी गलत साबित हुई है। संख्या के आधार पर दोनों पत्रों ने क्रिकेट के बाद राष्ट्रीय खेल को स्थान दिया है। लेकिन स्थान के आधार पर दैनिक जागरण ने क्रिकेट के बाद टेनिस और उसके बाद राष्ट्रीय खेल को प्राथमिकता दी है। दोनों पत्रों में से किसी ने इसे प्राथमिकता से छापा। दैनिक जागरण ने केवल एक दिन राष्ट्रीय खेल को लीड दिया जबकि दैनिक भास्कर ने एक दिन द्वितीय लीड दिया है।
- तीसरी उपकल्पना थी कि "क्रिकेट विश्व कप के कारण भी राष्ट्रीय खेल को कम कवरेज मिली।" यह बात काफी हद तक सही साबित हुई है। साक्षात्कार और प्रश्नवली में लोगों ने कहा कि क्रिकेट विश्व कप का असर राष्ट्रीय खेल की कवरेज पर पड़ा है।
- चौथी उपकल्पना थी कि "लोग केवल क्रिकेट की ही खबरें नहीं पढ़ना चाहते हैं।" लोग ज्यादा क्रिकेट की खबरें पढ़ना चाहते हैं लेकिन केवल क्रिकेट की खबरें नहीं पढ़ना चाहते हैं।

जो उपकल्पना बनाई गई थी उसमें अधिकतर सही साबित हुए हैं।

सुझाव

क्रिकेट के अलावा भी अन्य खेल भारत में आगे और उनको भी समाचार-पत्रों में कवरेज मिले इसके लिए कुछ कदम उठाने होंगे।

जमीनी स्तर पर प्रशिक्षण की व्यवस्था- हमारे देश जमीनी स्तर पर बच्चों को प्रशिक्षित करने की व्यवस्था काफी लचर है। गांवों के कई स्कूलों में तो खेलने के लिए मैदान तक नहीं है। ऐसे में हम कैसे अच्छे खिलाड़ी की उम्मीद कर सकते हैं। खेल का भविष्य सुधारने के लिए जमीनी स्तर से शुरुआत करने की जरूरत है।

गैर-क्रिकेट खेल में प्रदर्शन देना होगा- जीतना किसी भी खेल में जरूरी है। अगर किसी खेल में प्रदर्शन नहीं आएगा तो उस खेल को कवरेज नहीं मिलेगी। तो गैर-क्रिकेट खेलों में खिलाड़ियों को प्रदर्शन देना होगा। वह बात अलग है कि क्रिकेट में हारते भी हैं तो उसकी कवरेज अच्छी होती है।

खेल बिल लागू हो- कानून को प्रतियोगिताओं और निर्णय लेने की प्रक्रिया से जुड़े निकायों में सदाचरण और खेल भावना के नियमों को स्थापित करने प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए। खेल निकायों और खिलाड़ियों को परामर्श सेवाएं दी जानी चाहिए। इस तरह के स्वस्थ संप्रेषण के लिए कानूनी बिरादरी और खेल समुदाय के बीच समन्वय एक पूर्व शर्त है। राष्ट्रीय पहचान और भारत का प्रतिनिधित्व करने की भावना राजनीतिक निर्णयों से ऊपर रहनी चाहिए। बेहतर होगा कि किसी खिलाड़ी को ही संगठन का शीर्ष पद सौंपा जाए। बजाय इसके कि उस पर प्रशासक, नेता अथवा निहित स्वार्थों वाला कोई व्यक्ति बैठा हो। भ्रष्टाचार रोकने के लिए खेल संघों के पदाधिकारियों पर कार्यकाल की सीमा और आयु की पाबंदी को लागू करना जरूरी है। यदि किसी खिलाड़ी अथवा प्रतिद्वंद्वी संगठन को अनिवार्य सुविधाएं नहीं मुहैया कराई जाती, या फिर जानबूझकर अलहदा नीतियां अपनाई जाती हैं, तो संबंधित प्रशासक की सेवाएं समाप्त कर देनी चाहिए। खिलाड़ियों और

टीमों की वेतन सीमा तय होनी चाहिए। महिला खिलाड़ियों के साथ अधिक संवेदनशील पूर्वक व्यवहार करना चाहिए और उन्हें कानूनी सहायता प्रदान करनी चाहिए।

सैट-अप सही करें- क्रिकेट के साथ एक अच्छी बात है कि अगर उसके किसी भी मैच के बारे में आप लिखना चाहे तो उसके आंकड़ें मौजूद हैं लेकिन दूसरे खेलों के साथ ऐसा नहीं है। राष्ट्रीय खेल के ही पुराने आंकड़े खोजे जाए तो नहीं मिलेंगे। तो इसको ठीक करना होगा।

स्कूली बच्चों को खेल देखने के लिए आमंत्रित करें- क्रिकेट को छोड़ दिया जाए तो अन्य खेलों के मैदान अधिकतर खाली ही नजर आते हैं। आयोजकों को इन खेलों को देखने के लिए स्कूलों के कम दाम पर टिकटे मुहैया करानी चाहिए। इससे मैदान भरा रहेगा। खिलाड़ियों में भी जोश आएगा। उनको मैदान भरा चाहिए। उनको इस बात से फक्र नहीं पड़ता कि सीट पर कौन बैठा है। दूसरा जो बच्चा मैदान में खेल को देखेगा वह उससे जुड़ जाएगा। वह आगे चलकर खिलाड़ी न भी बने तो उस खेल का दर्शक बनेगा जिससे किसी न रूप में उस खेल का ही विकास होगा।

कॉरपोरेट घराने एक-एक खेल गोद ले- देश में जितने भी बड़े कॉरपोरेट घराने हैं अगर वह एक-एक खेल गोद ले ले तो उस खेल के विकास की जिम्मेदारी उनकी होगी। कई कॉरपोरेट घराने ऐसा कर भी रहे हैं। जिसमें टाटा ने रांची में खेल के लिए काफी सुविधाएं मुहैया कराई हैं।

गैर क्रिकेट खेल के खिलाड़ियों के संचार कौशल में सुधार- गैर क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ एक समस्या है कि वह मीडिया से सही तरीके से बात नहीं कर पाते या उनसे बात करने से कतराते हैं। जबकि क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ ऐसा नहीं है। खेल को लोगों के साथ जोड़ने के लिए जरूरी है खिलाड़ी अपनी बात सही तरीके से रख सके।